# श्रीकृष्ण

## (अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

## भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासम्बन्धी जो थोडा-बहुत ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी अथवा सुनी हुई कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासम्बन्धी अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर दृढ विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है । आगे यह विश्वास श्रद्धामें रूपान्तरित होता है । इससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें श्रीकृष्णसे सम्बन्धित, प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर बल दिया गया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येक को अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले ! - **संकलनकर्ता**

**पढें : सनातनका ग्रन्थ 'श्री सरस्वतीदेवी'**

# अनुक्रमणिका


१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १०

२. कृष्णके 'वासुदेव' नामका अर्थ १०

३. जन्म १०

४. कुछ कुटुम्बीय एवं परिजनोंका भावार्थ ११

५. राधा १२

६. विशेषताएं एवं कार्य १४

७. श्रीकृष्णके रूप एवं मूर्तिविज्ञान २६

८. सनातन-निर्मित श्रीकृष्णका 'चित्र' एवं 'नामजप-पट्टियां' २७

९. सुदर्शन चक्र १०. महाभारत ३३

११. गीता १२. अवतारसमाप्ति ३५

१३. जीवनक्रम १४. निवास ३९

१५. श्रीकृष्णकी उपासना ४१

१६. श्रीकृष्णके विषयमें किए गए निराधार वक्तव्योंका प्रतिवाद ६१

**卐 भगवान श्रीकृष्णकी आरती** ६५